

संपादकीय

सरकार पर दारोमदार

रिजर्व बैंक ने साल की आखिरी द्विमासिक मौद्रिक नीति में ब्याज दरें घटाने से तो मना कर ही दिया, इस वित्त वर्ष में जीडीपी ग्रोथ का अनुमान भी 6.1 फीसदी से घटाकर 5 फीसदी पर ला दिया। इससे पहले रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति ने लगातार पांच बार रीपो रेट में कटौती की थी। रीपो रेट वह दर है जिस पर आरबीआई बैंकों को कर्ज देता है। जीडीपी ग्रोथ के ताजा आंकड़े बता रहे थे कि जुलाई-सितंबर तिमाही में यह 4.5 फीसदी पर खिसक आई है, जो पिछले छह साल का सबसे निचला स्तर है। इसलिए उम्मीद जताई जा रही थी कि रिजर्व बैंक रीपो रेट में थोड़ी और कमी लाकर आर्थिक गतिविधियां तेज करने में सरकार का हाथ बंटा सकता है।

लेकिन एक तो पिछली पांच कटौतियां आर्थिक विकास के मोर्चे पर कुछ खास फायदा नहीं दे सकीं, दूसरे, लगातार कटौतियों के बाद अब रिजर्व बैंक के पास पीछे जाने की गुंजाइश भी नहीं रह गई थी। खुदरा महंगाई दर का अनुमान उसने 4.7 से 5.1 प्रतिशत के बीच रखा है। ऐसे में रीपो रेट को मौजूदा 5.15 प्रतिशत से नीचे लाना नकारात्मक ब्याज दरों के खतरनाक दायरे में प्रवेश करने जैसा था। हालांकि आगे महंगाई नीचे जाने की स्थिति में आरबीआई ने अपने विकल्प खुले रखे हैं। केंद्रीय बैंक ने उम्मीद जताई है कि सरकार द्वारा पहले ही उठाए जा चुके कुछ कदमों के चलते अगली तिमाही में बेहतर नतीजे देखे जा सकते हैं, लेकिन उसके वक्त वय में आए ब्योरे अर्थव्यवस्था की नाजुक स्थिति की ओर ही इशारा करते हैं।

ग्रोथ रेट बेहतर, इससे पहले भी पांच फीसदी से नीचे गई है। इस लिहाज से मौजूदा स्थितियों को अभूतपूर्व नहीं कहा जा सकता। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि भारतीय अर्थव्यवस्था आज कुछ उसी तरह की चुनौतियों का सामना कर रही है जो 21वीं सदी के इन दो दशकों में सबसे कठिन मानी जाती रही हैं। 2008-09 जैसी वैश्विक मंदी आज नहीं है और 2012-13 जैसी पॉलिमी पैरालिसिस वाली स्थिति भी नहीं है। लेकिन पिछले दोनों मौकों पर सरकारों संकट से निपटने के लिए हाथ-पांव मारती नजर आती थीं, जबकि इस बार सरकार की कोशिश संकट जैसी धारणा को ही सिरे से खारिज करने की रही है। मौद्रिक नीति समिति की बैठक के बाद जारी रिजर्व बैंक के इस बयान के बाद सारी जय-क्षय सरकार पर ही आ गई है।

ग्रोथ के चार प्रमुख कारकों में से तीन में फिलहाल कोई हलचल नहीं है। न विदेशी निवेश की कोई लहर करीब है, न निजी निवेश में कोई उत्साह देखा जा रहा है, न ही उपभोक्ता। खर्च में किसी बड़ी बढ़त के आसार हैं। ऐसे में सारी उम्मीदें सरकारी निवेश पर ही टिकी हैं। यह सरकार के कोशल का इम्तहान है। मंत्रियों की कोशिश छोटे-छोटे मामलों में भी आर्थिक सक्रियता की गुंजाइश बनाने की होनी चाहिए, बयान बहादुरी का वक्त जा चुका है। रिजर्व बैंक ने सुझाया है कि लंबित परियोजनाओं के रास्ते की अड़चनें दूर करके इन्हें जल्द से जल्द चालू करना अभी के लिए सबसे बड़ा लक्ष्य होना चाहिए।

सारा अली खान और धनुष के साथ नजर आएंगे अजय देवगन?

सारा अली खान का अब तक का बॉलिवुड का सफर शानदार रहा है। फिल्म केदारनाथ से डेब्यू करने वाली सारा की दूसरी फिल्म सिम्भा भी सुपरहिट रही थी। वह अपनी अगली फिल्म आज कल की शूटिंग पूरी कर चुकी हैं। इम्तियाज अली के डायरेक्शन में बन रही इस फिल्म में सारा के साथ कार्तिक आर्यन नजर आएंगे। सारा इस समय अपनी एक और फिल्म कुली नंबर 1 की शूटिंग कर रही हैं जिसमें वह वरुण धवन के साथ दिखाई देंगी। अब सारा के बारे में एक और खबर आ रही है कि उनकी आने



सारा अली खान को आनंद एल राय से मुलाकात करते हुए देखा गया था। अब अगर अजय इस फिल्म में काम करते हैं तो इन तीनों को एक साथ देखना दिलचस्प होगा।

से संपर्क किया गया है और वह इस रोल को करने के लिए तैयार भी हैं। कुछ दिनों पहले धनुष ने कहा था कि वह आनंद एल राय के साथ एक फिल्म कर रहे हैं। इसके बाद सारा अली खान को आनंद एल राय से मुलाकात करते हुए देखा गया था। अब अगर अजय इस फिल्म में काम करते हैं तो इन तीनों को एक साथ देखना दिलचस्प होगा। वैसे सारा के लिए भी यह बहुत बड़ा मौका होगा क्योंकि वह एक बॉलिवुड स्टार और साउथ के स्टार के साथ काम करेंगी।

इंक्म टैक्स में जनता को राहत देने की तैयारी में मोदी सरकार

नई दिल्ली (आरएनएस)। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को संकेत दिया कि सरकार आयकर में बदलाव कर सकती है। सीतारमण ने यहां एक समिट को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए कई कदमों पर विचार कर रही है और आयकर में कमी करना भी इन्हीं में एक हो सकता है। इस सवाल के जबाब में कि आम लोगों को कितनी जल्दी आयकर में कटौती का तोहफा मिल सकता है वित्त मंत्री ने कहा कि बजट तक का इंतजार कीजिए। आगामी वित्त वर्ष का बजट फरवरी में पेश किया जाना है। देश की अर्थव्यवस्था में



वर्तमान में सुस्ती की गिरफ्त में है। हाल में चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के आंकड़े आए जिसमें अर्थव्यवस्था की रफ्तार जनवरी-मार्च 2013 के बाद के निचले स्तर 4.5 प्रतिशत पर रह गई। गौरतलब है कि रिजर्व बैंक ने गुरुवार को चालू वित्त वर्ष की

पांचवीं द्वैमासिक मौद्रिक नीति में 2019.20 के लिए जीडीपी अनुमान घटाकर पांच प्रतिशत कर दिया है। उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए सरकार निरंतर कदम उठा रही है। दूर-दराज के क्षेत्रों में खपत बढ़ाने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने पिछले दो माह के दौरान पाँच लाख रुपये का ऋण वितरित किया है। बुनियादी सुविधा ढांचे पर जोर दिया जा रहा है जिससे श्रमिक वर्ग तक लाभ पहुंचाया जा सके। इसके अलावा पिछले कुछ माह के दौरान शेयर बाजार से लाभ पर प्रभार बढ़ोतरी का फैसला

वापस लिया गया और कंपनी कर को घटाया गया। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का विलय करने समेत कई और निर्णय लिए गए जिससे कि अर्थव्यवस्था को गति दी जा सके। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के स्लैबों के बदलाव के संबंध में श्रीमती सीतारमण ने कहा कि इस पर कोई भी फैसला जीएसटी परिषद करेगी। मीडिया में ऐसी रिपोर्टें हैं कि जीएसटी की सबसे निचली दर पाँच प्रतिशत को बढ़ाने के साथ ही इसके दायरे में ऐसी वस्तुओं को लाया जा सकता है जिन पर फिलहाल जीएसटी नहीं है। वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार सामाजिक दायित्वों पर भी पूरा जोर दे रही है।

एनटीपीसी ने एसबीआई के साथ पांच हजार करोड़ रुपये के सावधि ऋण का करार किया

नई दिल्ली (आर एनएस)। बिजली उत्पादन कंपनी एनटीपीसी ने शनिवार को कहा कि उसने भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के साथ पांच हजार करोड़ रुपये के सावधि ऋण का एक करार किया है। कंपनी ने एक बयान में कहा कि इस ऋण की ब्याज दर बैंक के तीन महीने के सीमांत लागत आधारित कोष की दर से जुड़ी होगी और इस्तेमाल



किए गए कर्ज को वापस करने की कुल अवधि 15 साल होगी। कंपनी ने कहा कि इस ऋण से प्राप्त राशि का इस्तेमाल पूंजीगत जरूरतों के वित्तपोषण में किया जाएगा।

अब आरसी और डीएल को मोबाइल नंबर से लिंक कराना अनिवार्य

नई दिल्ली (आरएनएस)। वाहन चलाने वाले लोगों के लिए यह खबर काम की हो सकती है खबर है कि सरकार एक ऐसा नियम लेकर आ रही है जिसके तहत वाहन के दस्तावेज जैसे ड्राइविंग लाइसेंस (डीएल), रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट (आरसी) से मोबाइल नंबर लिंक करना होगा। यह नियम एक अप्रैल 2020 से लागू होगा। इस संबंध में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने एक अधिसूचना जारी कर इस पर लोगों की राय मांगी है। इस संबंध में लोग 30 दिन के अंदर यानी 29 दिसंबर तक अपने सुझाव सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय को



भेज सकते हैं। यह मामला उस समय सामने आया, जब बुधवार को केंद्रीय कैबिनेट ने पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन बिल को मंजूरी दी। इस बिल का मकसद पब्लिक और प्राइवेट कंपनियों के लिए पर्सनल डेटा को रेगुलेट करने की व्यवस्था करना है। माना जा रहा है कि वाहन के दस्तावेजों से मालिक

के मोबाइल नंबर से लिंक होने से गाड़ी चोरी होने की जानकारी मिलेगी। वाहन दस्तावेजों के साथ मोबाइल नंबर लिंक होने से गाड़ी की चोरी, खरीद-फरोख्त पर अंकुश लगाने में मदद मिलेगी। इस नियम के तहत एक मोबाइल नंबर पांच वाहनों को ही रेजिस्टर कराया जा सकता है। इसके अतिरिक्त वाहन डेटा बेस में मोबाइल नंबर दर्ज होने से जीपीएस के अलावा मोबाइल नंबर को मदद से किसी भी व्यक्ति की लोकेशन का पता किया जा सकता है। इसमें विशेषकर सड़क दुर्घटना, अपराध को अंजाम देने के बाद पुलिस उक्त व्यक्ति का तुरंत पता लगा सकती है और भ्रष्टाचार से भी राहत मिलेगी। साथ ही केंद्र सरकार और अन्य सरकारी संस्थाओं के पास सभी वाहनों और ड्राइविंग लाइसेंस का पूरा डेटा, मोबाइल नंबर सहित उपलब्ध होगा। अगर जरूरत पड़ी तो पुलिस, आरटीओ या कोई अन्य एजेंसी आसानी से वाहन चालक या उसके मालिक से संपर्क कर सकती है। जबकि बड़े महानगरों में इंटेलिजेंट ट्रैफिक मैनेजमेंट को लागू किया जा सकता है।

हैदराबाद टी-20: कोहली के तूफान के आगे विश्व विजेता विंडीज ध्वस्त

हैदराबाद। कप्तान विराट कोहली (नाबाद 94) की बेहतरीन तूफानी पारी के दम पर भारत ने यहां राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम में खेले गए पहले टी-20 मैच में विंडीज द्वारा रखे गए 208 रनों के विशाल लक्ष्य को आसान साबित कर छह विकेट से जीत दर्ज की। भारत की इस जीत में कोहली के अलावा लोकेश राहुल ने भी 62 रनों का योगदान दिया। कोहली का यह टी-20 में सर्वोच्च स्कोर भी है। इस

जीत के साथ ही भारत ने तीन मैचों की टी-20 सीरीज में 1-0 की बढ़त ले ली है। यह भारत द्वारा टी-20 में हासिल किया गया अभी तक का सबसे बड़ा लक्ष्य है। इस मैच में 27 छके लगे जो किसी भी टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैच में लगाए गए सबसे ज्यादा छके हैं। कोहली की इस पारी ने शिमान हेटमायरे

(56), एविन लुइस (40) और विंडीज के कप्तान केनर पोलार्ड (39) की मेहनत पर पानी फेर दिया। विंडीज ने भारत को विशाल लक्ष्य दिया और रोहित शर्मा (8) के 30 के कुल स्कोर पर आउट होने के बाद लगा कि भारत के लिए यह जीत मुश्किल हो सकती है, लेकिन राहुल और कोहली ने इसे अपनी बल्लेबाजी से आसान बना दिया।



विंडीज ने भारत को विशाल लक्ष्य दिया और रोहित शर्मा (8) के 30 के कुल स्कोर पर आउट होने के बाद लगा कि भारत के लिए यह जीत मुश्किल हो सकती है, लेकिन राहुल और कोहली ने इसे अपनी बल्लेबाजी से आसान बना दिया।

सर्दियों में फायदेमंद है मेथी, जोड़ें का दर्द और डायबीटीज रहेगा दूर

सर्दियों में हरी सब्जियों की भरमार होती है। इनमें मेथी काफी अहम है। मेथी सिर्फ स्वाद में ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद होती है। मेथी को कई बीमारियों के इलाज के लिए अच्छा माना जाता है। मेथी के पत्ते हों या फिर बीज दोनों ही अलग-अलग फायदों की वजह से जाने जाते हैं। जैसे तो मेथी के दानों को आप किसी भी सीजन में खा सकते हैं लेकिन मेथी का साग सिर्फ सर्दियों के मौसम में आता है। लिहाजा इस दौरान मेथी का सेवन कितना फायदेमंद है, यहां जानें।



जिससे आर्टी ब्लॉकेज का खतरा भी कम होता है। डायबीटीज में फायदेमंद- डायबीटीज के रोगियों के लिए मेथी के बीज हों या मेथी की सब्जी, दोनों ही फायदेमंद हैं। इसके लिए आप मेथी के बीज रात को पानी में भिगोकर रखें और सुबह उसी पानी की चाय बनाकर रोजाना 1 कप पिएं। इससे आपको ब्लड शुगर कंट्रोल करने में मदद मिलेगी और वजन भी नियंत्रित रहेगा। इसमें मौजूद अमिनो एसिड इंसुलिन का उत्पादन बढ़ाने में मदद करेगा।

हार्ट को हेल्दी रखती है मेथी- मेथी हृदय को स्वस्थ बनाने में मदद करती है। इसमें पोटेशियम और सेलेनियम का अच्छी मात्रा होती है। इसलिए आप सर्दियों में जितना हो सके मेथी का सेवन करें। मेथी शरीर में बैड कलेस्ट्रॉल को कम करने में मददगार है। इसमें मौजूद लिपोप्रोटीन (एलडीएल) कलेस्ट्रॉल के स्तर कम करने में मदद करता है और आपको दिल संबंधी बीमारियों से दूर रखता है। इसके अलावा हरी मेथी में गैलेक्टोमैनन होता है, जो हेल्दी हार्ट हेल्थ के लिए अच्छा होता है। मेथी ब्लड सर्कुलेशन को भी बेहतर रखने में मदद करती है,

जोड़ों व हड्डियों के दर्द में असरदार- हरी सब्जियां कई पोषक तत्वों से भरपूर होती हैं, जो हमारी कई बीमारियों से लड़ने और उन्हें काटने में मदद करती हैं। ठीक इसी तरह मेथी भी है। यह आपके जोड़ों के दर्द और हड्डियों के दर्द यानी गठिया या ऑस्टियोपोरोसिस के रोगियों के लिए फायदेमंद होती है। मेथी कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयर्न और फॉस्फोरस से भरपूर होती है।

सलमान की फिल्म राधे में आइटम नंबर करेंगी जैकलीन

बॉलीवुड अभिनेत्री और पूर्व मिस श्रीलंका जैकलीन फर्नांडीस दबंग स्टार सलमान खान की फिल्म राधे में आइटम नंबर करती नजर आ सकती हैं। सलमान इन दिनों प्रभुदेवा के निर्देशन में बन रही फिल्म राधे में काम कर रहे हैं। राधे में वह बिलकुल नये अंदाज में नजर आने वाले हैं। फिल्म में दिशा पाटनी फीमेल लीड रोल कर रही हैं। कहा जा रहा है कि इस फिल्म में जैकलीन फर्नांडीस भी होंगी।



फिल्म में जैकलीन का किरदार होगा या नहीं इस बारे में तो खुलासा नहीं हुआ है लेकिन इतना जरूर बताया जा रहा है कि वह सलमान की इस फिल्म में एक जबरदस्त आइटम नंबर करती नजर आएंगी। जैकलीन इससे पहले सलमान खान के साथ फिल्म किक में काम कर चुकी हैं। उन दोनों की अच्छी दोस्ती है। सलमान की फिल्म राधे 2020 की ईद पर रिलीज होगी।

मटर और पालक सेहत और स्वाद दोनों में ही बेस्ट, जाने बनाने की रेसिपी

सामग्री: 350 ग्राम मटर, 1/2 किलो पालक, 250 ग्राम टमाटर, 2 हरी मिर्च, 1 इंच लंबा टुकड़ा अदरक, डेढ़ टीस्पून तेल, 1 टेबलस्पून बेसन, चुटकीभर होंग, छोटा चम्मच जीरा, 1/4 टीस्पून हल्दी पाउडर, नमक-स्वादानुसार, एक चौथाई छोटी चम्मच गरम मसाला

विधि: पालक धोने के बाद ढककर धीमी आंच पर उबलने रख दें। टमाटर, हरी मिर्च, अदरक और उबले हुए पालक को बारीक पीस लें। कढ़ाही में एक टेबलस्पून तेल डालकर गरम करें। उसमें होंग व जीरा डालें। जीरा धुनने पर हल्दी पाउडर और टमाटर का पेस्ट डाल दें। मसाले को तब तक भूनें, जब तक कि वह तेल न छोड़ने लगे। इस

मसाले में उबले हुए मटर के दाने डालकर दो मिनट तक भूनें। एक छोटी कढ़ाही में तेल गरम करें। उसमें बेसन भूनें। बेसन के भून जाने पर उसको टमाटर व मटर के भूने हुए मसाले और पालक के पेस्ट में मिलाएं। पानी डालकर अच्छी तरह सब्जी मिलाएं। उबाल आने तक सब्जी पकने दें। गैस बंद करने के बाद सब्जी में गरम मसाला डालकर मिला दें। गरमा गरम पालक करी को चपाती, परांठ, नान या चावल के साथ परोसें।



शब्द सामर्थ्य- 67

बाएं से दाएं
1. रूचिकर लगने वाली, रूचि के अनुकूल, चुनी हुई 3. राज्यों के बैठने का आसन 6. श्रमिक 7. कार्य, काज 9. चाण्डल आदि बजाने वाला 10. सहार, सहायक 11. शर्म, लाज, हया 12. मशीन 3. हिंदू विवाहित स्त्री के मांग में भरने का लाल चूर्ण 4. पराजय, माला 5. मुंह बचकने का कपड़ा, चुपट 8. चंद्रन, दक्षिण का 20. अर्वाधि, समय 21. तर्क वितर्क और कहा-सुनी, जबानी झगड़ा 22. सूत, आकार 23. झुका हुआ, नत।

ऊपर से नीचे
1. पंद्रह दिन का समय, शुक्ल या कृष्ण पक्ष 2. आग बुझाने की मशीन 3. हिंदू विवाहित स्त्री के मांग में भरने का लाल चूर्ण 4. पराजय, माला 5. मुंह बचकने का कपड़ा, चुपट 8. चंद्रन, दक्षिण का एक पर्वत 10. व्यवस्थित करना, सजाना, स्वभाव आदि का परिष्कार, शुद्ध संबंधी कृत्य 12. विशालता, बड़पन, महान होने का भाव 13. अड़चन, रुकावट 15. जमीन के अंदर गहरा और लंबा रास्ता, अच्छे रंग का 16. बेवकूफ, अहमक 17. औसत के हिसाब से 18. कृपक 19. अधिक, ज्यादा।

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 66 का हल

ज	ल	आ	वा	जा	ही
मा	खू	व	दू	र	स्थ
ना	दा	न	सा	ग	लक्ष्य
न	ख	त	र	ल	
वी	रा	न	च	ट	क
र	व	आ	ज	क	ल
आ	ग	दा	ना		
भा	भी	ती	न	व	ध

सू-दोक् - 67

	3	7		2	1
2			9		4
7		1			5
	1		5	2	7
5				4	
	4		1		8
				1	
1	5		3		9
	2		6		5

सू-दोक् क्र. 66 का हल

8	9	5	1	6	3	2	4	7
3	2	1	9	7	4	8	6	5
4	7	6	2	5	8	3	9	1
7	6	9	5	2	1	4	3	8
1	2	3	4	9	7	6	5	2
2	5	4	8	3	6	1	7	9
5	3	8	7	4	2	9	1	6
6	1	7	3	8	9	5	2	4
9	4	2	6	1	5	7	8	3